शार्दूलविक्रीडित छन्द

शार्दूलविक्रीडित छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

शार्दूलविक्रीडित छन्द का लक्षण-

सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण तथा एक गुरु वर्ण आयें उसे शार्दूलविक्रीडित कहते हैं।

उदाहरण-

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथन्नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

विशेष-

क) इस छन्द के प्रत्येक चरण में 19 अक्षर होते हैं।

ख) इस छन्द में 12 तथा 7 संख्यक अक्षरों पर यति होती है।

ग) इस छन्द का स्वरूप इस प्रकार है-

ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ

Dhananjay Vasudeo Dwivedi